।। मिश्रीत विषय को अंग ।।

मारवाडी + हिन्दी

*

महत्वपूर्ण सुचना–रामद्वारा जलगाँव इनके ऐसे निदर्शन मे आया है की,कुछ रामस्नेही सेठ साहब राधाकिसनजी महाराज और जे.टी.चांड्क इन्होंने अर्थ की हुई वाणीजी रामद्वारा जलगाँव से लेके जाते और अपने वाणीजी का गुरु महाराज बताते वैसा पूरा आधार न लेते अपने मतसे,समजसे,अर्थ मे आपस मे बदल कर लेते तो ऐसा न करते वाणीजी ले गए हुए कोई भी संत ने आपस मे अर्थ में बदल नही करना है । कुछ भी बदल करना चाहते हो तो रामद्वारा जलगाँव से संपर्क करना बाद में बदल करना है ।

* बाणीजी हमसे जैसे चाहिए वैसी पुरी चेक नही हुअी,उसे बहुत समय लगता है। हम पुरा चेक करके फिरसे रीलोड करेंगे। इसे सालभर लगेगा। आपके समझनेके कामपुरता होवे इसलिए हमने बाणीजी पढनेके लिए लोड कर दी ।

|| मिश्रीत विषय को अंग ||

कवित्त

अणभे ऊर संग फोज , अरथ आवध कुँ भाया ।
चर्चा घुरे निशान , तोफ दिष्टांग कहाया ।
ज्ञान भेद अमराव , राग जस सिंधु गावे ।
मत फोजा मे सुर , जोर समसेर बजावे ।
अे फोजा जिण पास हे , जासुं जुटेन कोय ।
सब ज्ञानी सुखराम कहे , कर धर सन्मुख होय ।१।

संतो के अणभै ज्ञान का साथ होना ही फौज का साथ होना है,और अरथ करना ही हथिहार है ,चर्चा करते वो ही निशान याने ध्वज फरकना है,दृष्टांत देना ही तोफ का चलाना है,ज्ञान का भेद बताना ही अमराव है । परमात्मा के गुणानुवाद राग से गाना ही सिंधु राग सुनाना है । सतस्वरुप के ज्ञान में मति दृढ होना ही शुरवीरता है तथा दूसरों को भी सतस्वरुप आनंद पद का ज्ञान देना ही जोर से समसेर चलाना है । जिन संतो के पास ये फौजे है उनसे कोई लड नही सकता है । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की,सब ज्ञानी हाथ जोड्कर सामने सनमुख होते है । ।।१।।

पद बोले बाणी कहे , भजन करे भरपूर ।
सो पुरा सुखराम कहे , तां मुख बरसे नुर ।२।

जो हरजस बोलते है,वाणी द्वारा ज्ञान देते है और खुब भजन करते है । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की,वे पुरे संत ही है उनके मुख पर सतशब्द का तेज बरसता है । ।।२।।

जो जन पहुँता शिखर मे , साखंज भरे अनेक ।
सो हरीजन सुखराम के ,ब्रम्ह स्वरुपी देख ।३।

जो संत शिखर याने केवल पद आनंद पद में पहुँचे हुये है उनकी सब साक्षी देते है आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की,वे संत तो सतस्वरुप ब्रम्ह के रुप ही है । ।।३।।

जिंग शब्द है गिगन मे , भंवर गुफा के मांय ।
सुन पारख सुखराम कहे , सुर नर देवल जाय ।४।

भंवर गुफा मे जींग शब्द की गर्जना हो रही है । जैसे मनुष्य को देवताओके देवल मे जानेपे अनेक घंटीयोका टालकी आदि की भी आवाज आती है,ऐसे भंवर गुफा मे जींग ध्वनी की आवाज आती है,ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले । ।।४।।

इन्द्र पिलावे नीर रे , देश गांव घर जोय ।
पुरा संत सुखराम के , ज्यारा अे अंग होय ।५।

इंद्र जैसे देश गाँव घर सब जगह वर्षा कर पानी पिलाता है तो उस इंद को क्या स्वार्थ है

। आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की,ऐसे ही जो पहुँचे हुये संत है वे निस्वार्थ से देश गाँव व घरो मे जाकर उपदेश करते है । ।।५।।

पवन बाजे देश मे , बिन तेड्यो जग माय ।
पुरा संत सुखराम जी , ग्यान बतावे जाय ।६।

हवा सब जगह सारे देशमे बिना बुलाये सब जगह बराबर चलती है,ऐसे ही पहुँचे हुये संत भी सब जगह जाकर ज्ञान देते है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले । ।।६।।

सुरज की क्या चाय हे , दोड्यो फिरे हमेश ।
यूँ पुरा संत सुखराम के , मांड चेतावे देश ।७।

सुरज को क्या चाहना है जो हमेशा दौड्ता फिरता है,आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की,ऐसे पहुँचे हुये संत भी सब जगह जाकर ज्ञान द्वारा मनुष्य को चेताते रहते है । ।।७।।

देश गांव घर शहर मे , करे उजालो आय ।
यूँ पुरा संत सुखराम जी , ग्यान बतावे आया ।८।

जिस तरह सुर्य देश,गाँव,घर व शहर में अपना प्रकाश पहुँचाता है । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की,ऐसे ही पहुँचे हुये संत भी सब जगह जाकर अपने ज्ञान का उपदेश करते है । ।।८।।